

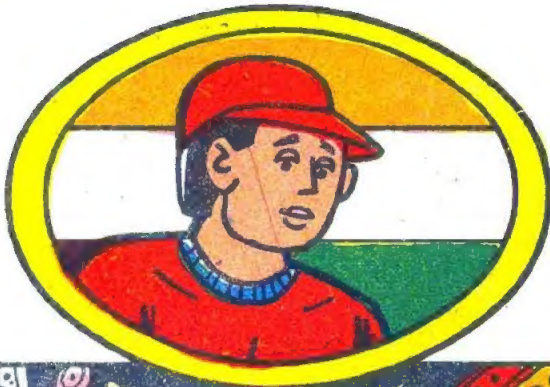
संख्या 5

मूल्य रु. 4.00



भारत कुमार और पागल लामा





भारत कुमार

और

पागल लामा

यह है हिमालय की दुर्गम घाटियों में स्थित एक अनोखी प्रयोगशाला का एक कक्ष-- वैज्ञानिक विक्रम और भारत कुमार ने इस प्रयोगशाला को देश और विश्व की सुरक्षा हेतु स्थापित किया है----

भारत कुमार, यह लो.. मैंने मानसिक तरंगों को पकड़ने वाले इस यंत्र को पूरी तरह से तैयार कर दिया है.. इस यंत्र के सहारे तुम किसी भी अपराधी का पता लगा सकते हो!

यह तो बहुत ही अच्छा हुआ विक्रम चाचा- अब तो मेरा काम बहुत ही आसान हो जायेगा-!

भारत कुमार, याद रहे.. सरकार ने तुम्हें वाणतंत्र दिवस परेड की निगरानी के लिए विशेष लौर पर बुलाया है.. सो किसी प्रकार की कमी जरूरतें पारें!!

आप चिन्ता न करे विक्रम चाचा, मैं अपनी ओर से कोई कमी नहीं छोड़ूंगा!

और भारत कुमार कमर पर लगे अपने विशेष रॉकेट के सहारे राजधानी की ओर उड़-चला....

कुछ ही मिनटों बाद मास्त कुमार राजपथ पर उड़ते हुए अपने विशेष यंत्र के सहारे मौड़ पर निगरानी रख रहा था...

इस हिस्से में मौजूद मौड़ के लोगों की मानसिक तरंगें तो बिल्कुल ठीक हैं...!!

अब जरा मैं सड़क के उस ओर वाली मौड़ का भी निरीक्षण कर लूं... परेड शुरू होने ही वाली है..!

टूट! टूट!

यहां किसी अपराधी की मानसिक तरंगों के संकेत मिल रहे हैं... मुझे उसे जल्दी ढूंढना है!

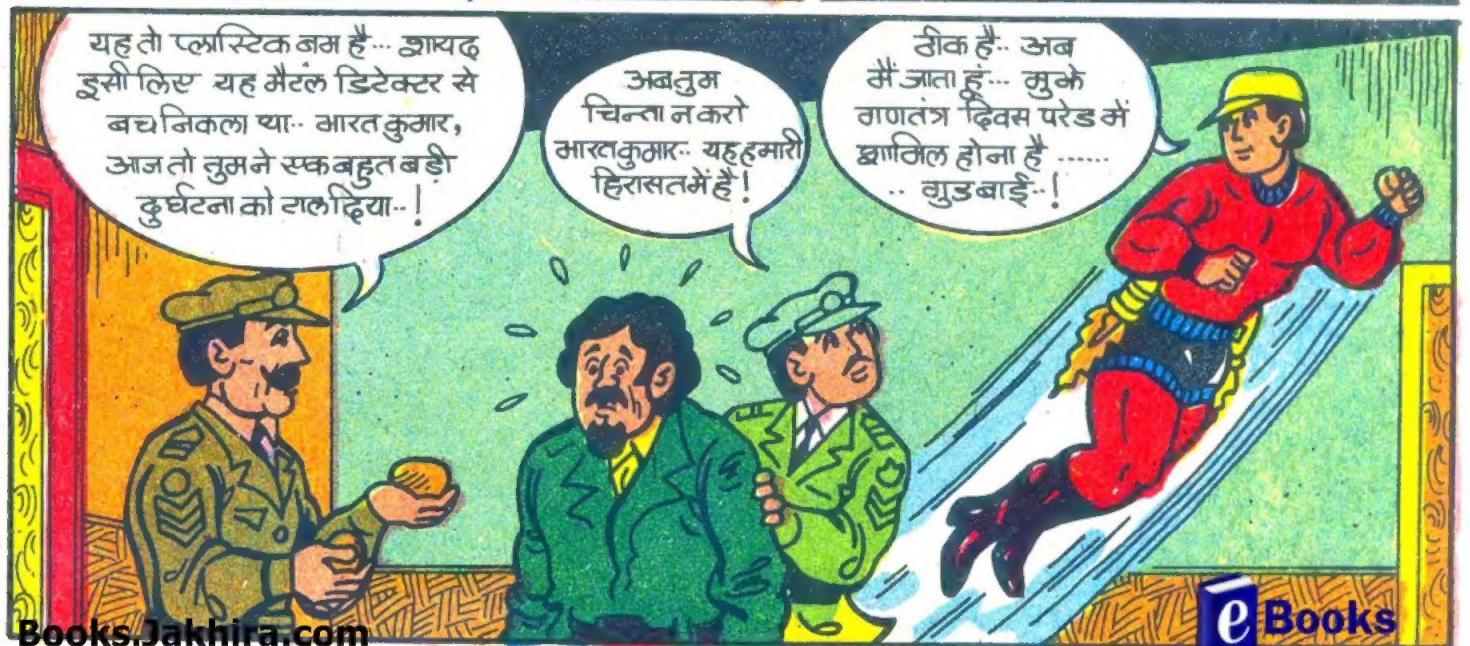
और मास्त कुमार ने कुछ ही देर में मौड़ में से उस सदिग्ध अपराधी को ढूंढ निकाला...

यह यंत्र तो वाकई कमाल का है....! यह अपराधी तो कोई विदेशी लगता है... इसके इरादे तो बहुत ही खतरनाक दिखते हैं!

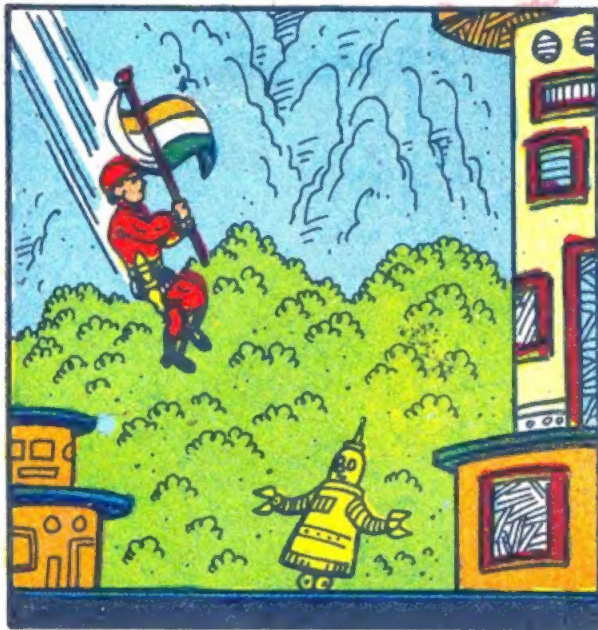
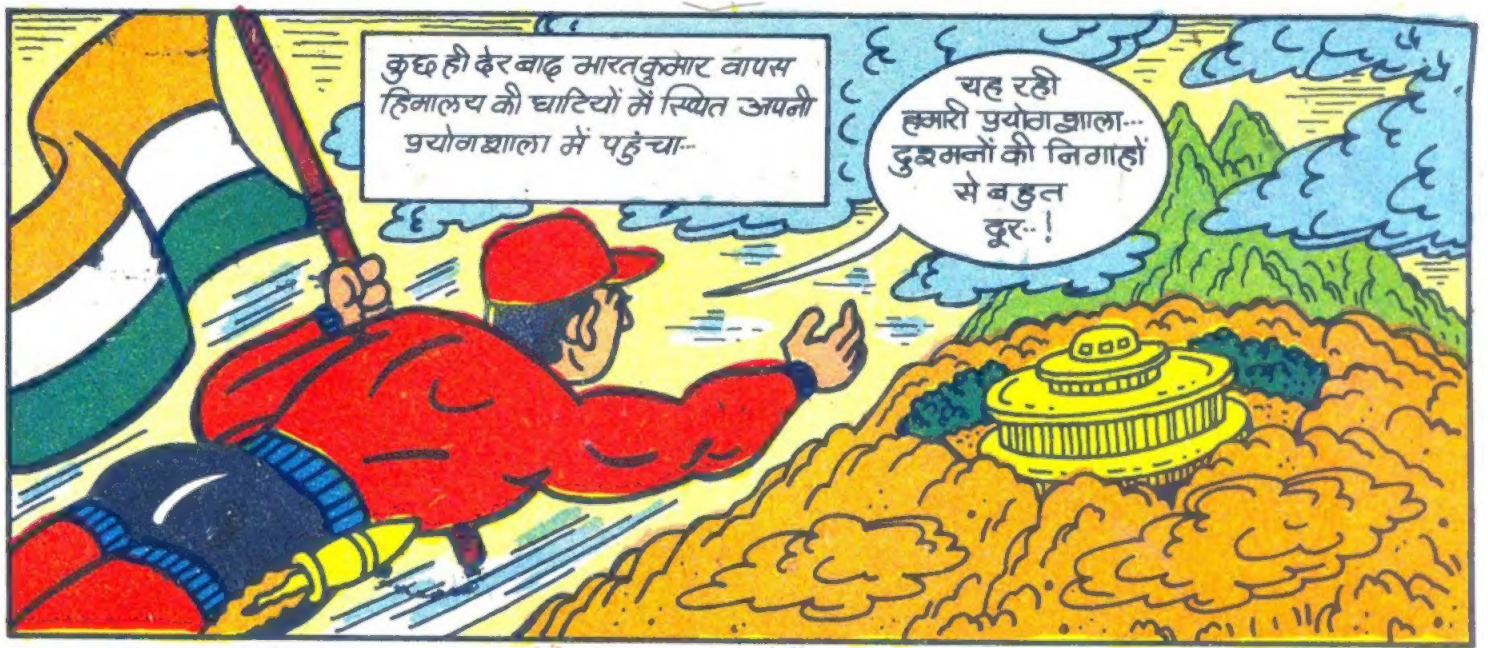
टूट! टूट!

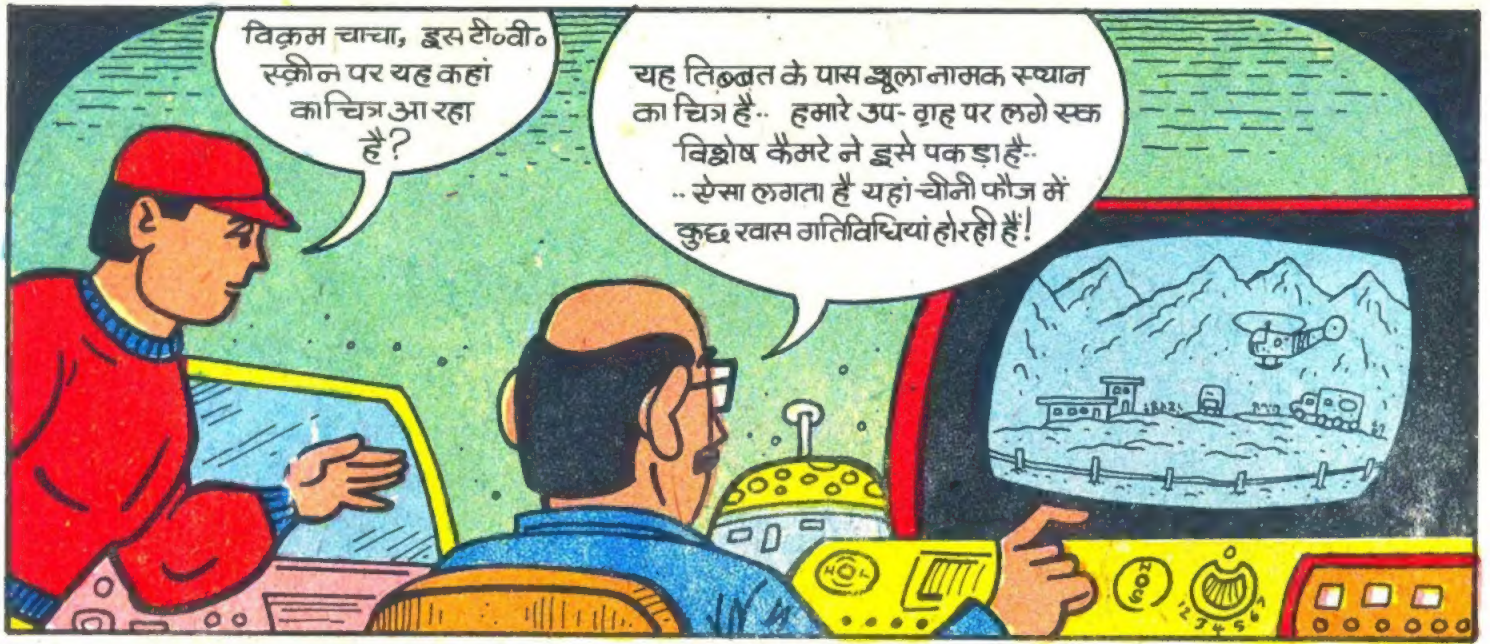
हमारा बम बिल्कुल तैयार होता... कार आते ही हम अटैक करता.. गुर्रररर!

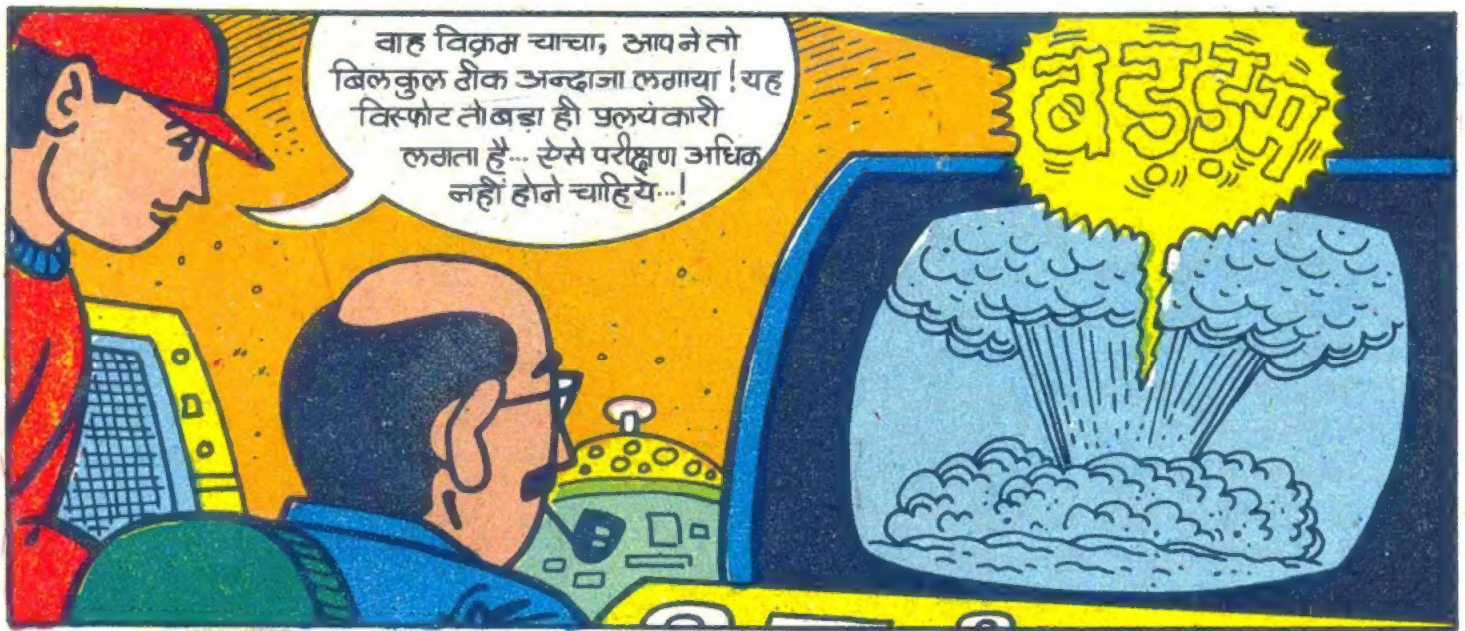








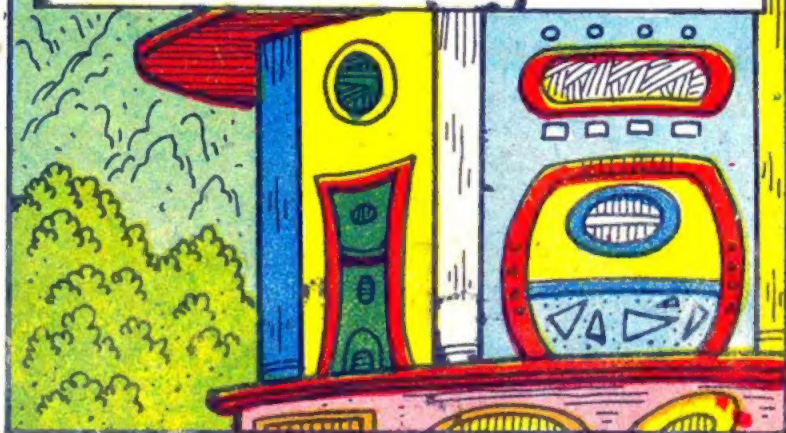




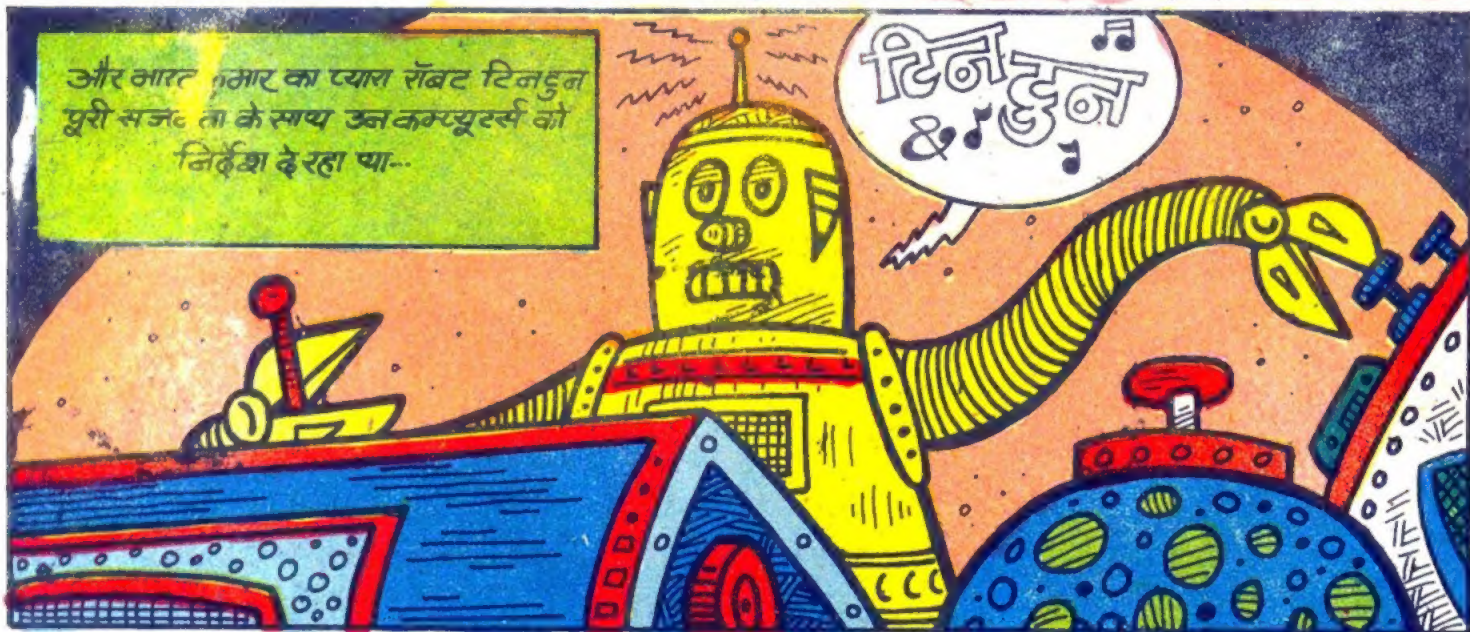
पूरी हिमालय पर्वतमाला रात की काली स्याही में डूब चुकी थी... हिम शिखर भी गहरी नींद ले रहे थे....



लेकिन वैज्ञानिक विक्रम की प्रयोगशाला के सारे यंत्र अपने-अपने कार्य में जुटे हुए थे... सैंकड़ों स्वाचालित कंप्यूटरस उन्हें निर्देश दे रहे थे....



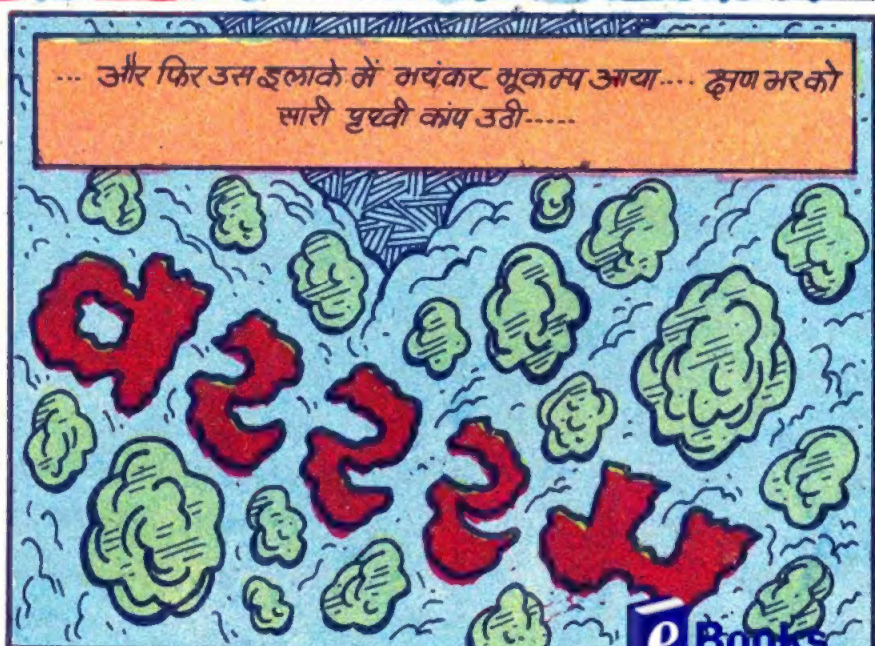
और भारत का प्यारा रोबोट टिनटून पूरी सज्जता के साथ उन कंप्यूटरस को निर्देश दे रहा था...



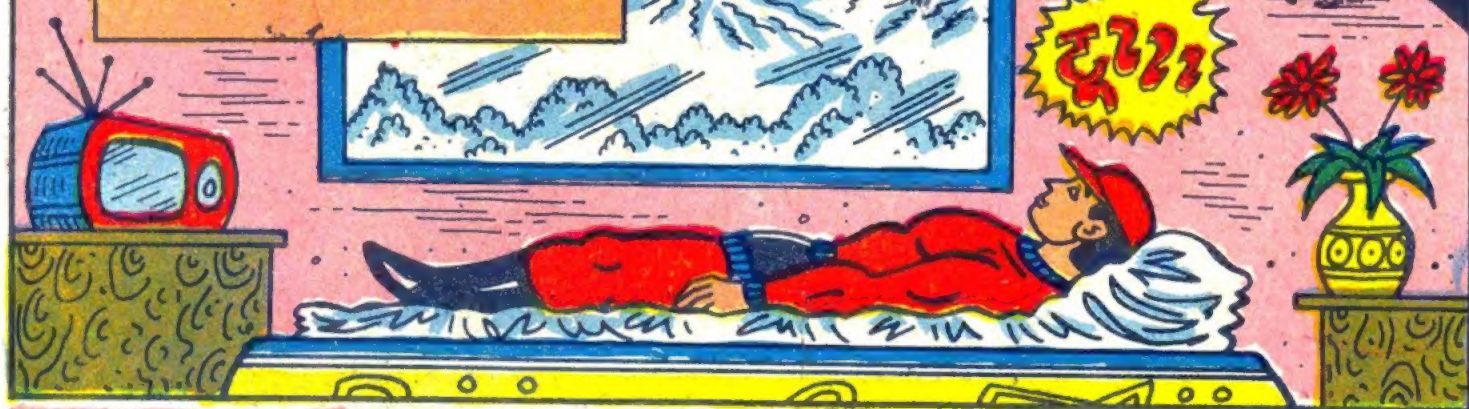
उसी रात बाईबजे के करीब एक हिम शिखर पर बड़ी तेज रोशनी चमकी...



... और फिर उस इलाके में भयंकर भूकम्प आया... क्षण भर को सारी पृथ्वी कांप उठी.....



उस समय भारत कुमार अपने विशेष
वातानुकूलित कक्ष में सो रहा था.....
... रॉबट टिन डुन ने खतरे का
अलार्म बजा दिया...



भारत कुमार उसी क्षण
उठता था....

खतरे का अलार्म....
.....? जाने क्या बात
है...??

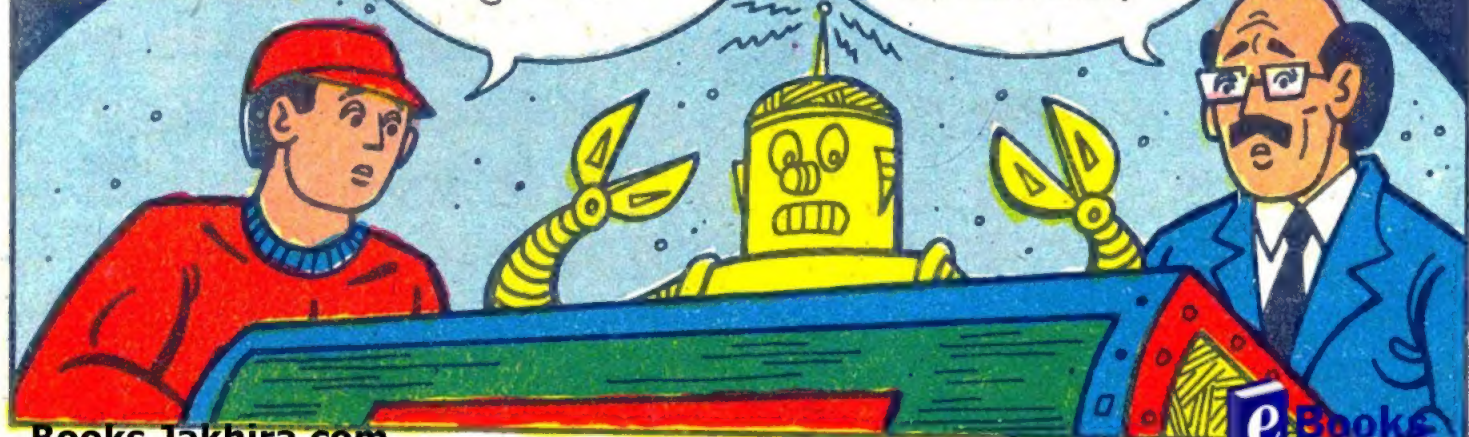


टिन डुन लगातार खतरे
का अलार्म बजा रहा है.....
... जरूर कोई बहुत बड़े
खतरे की बात है!

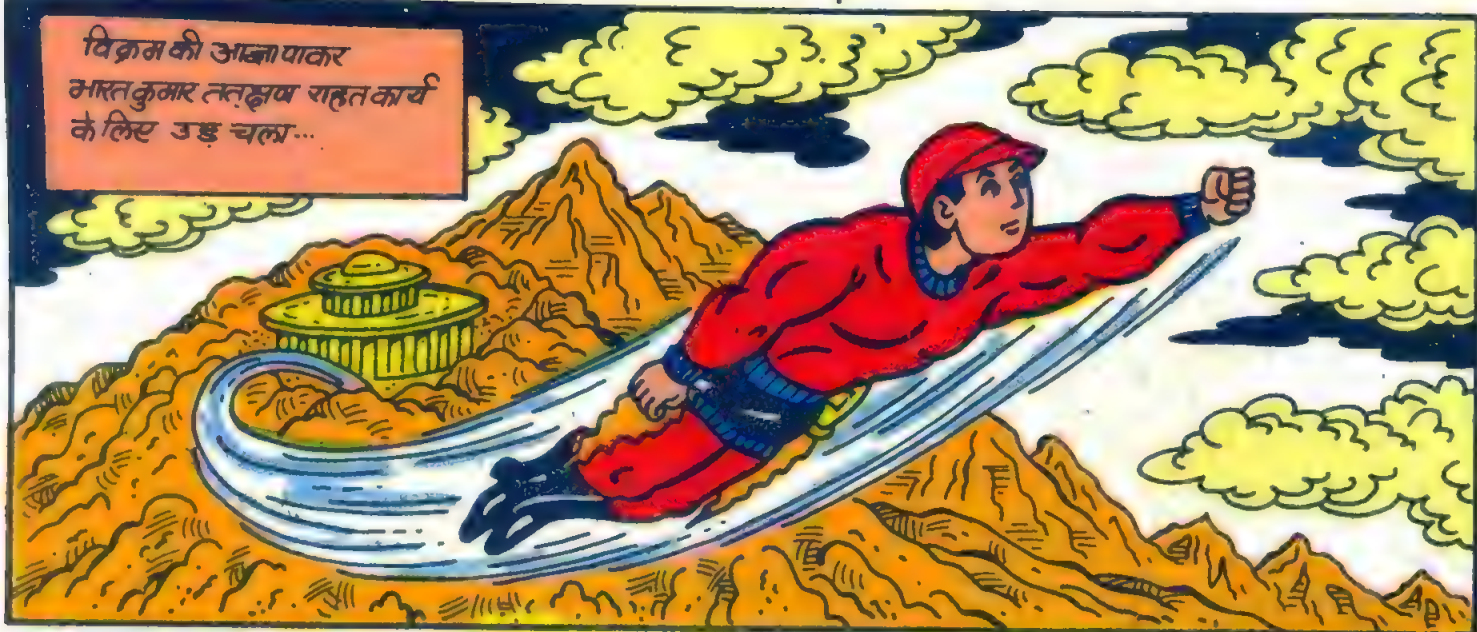
कुछ ही देर में
वैज्ञानिक विक्रम भी
वहां आ पहुंचे....

हे भगवान.. जरा
रीठ वीग स्कीन पर तो
देखो... कितनी तबाही हुई है
इस भूकम्प से.. यह सब
हुआ कैसे?

यह तो मैं अभी नहीं बता पाऊंगा
भारत कुमार... लेकिन तुरन्त
जाओ और खतरे में फंसे
लोगों को बचाओ!



विक्रम की आज्ञा पाकर
भारत कुमार तत्क्षण राहत कार्य
के लिए उड़ चला...

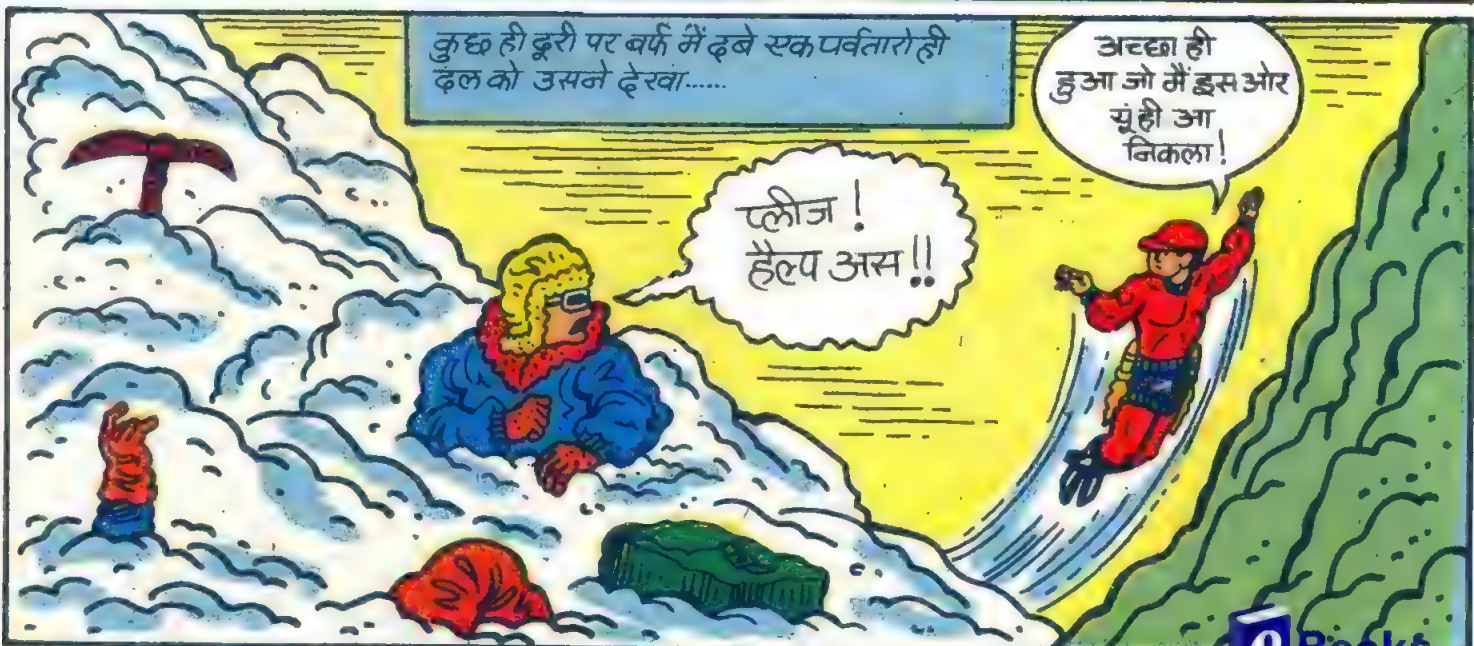


... और भारत कुमार ने अपनी
जान पर खेलते हुए सैकड़ों लोगों
की जान बचायी...



हे ईश्वर.. अगर मैं इस
विशाल पत्थर को न रोकता तो
यह मकान चकनाचूर हो
गया होता!

मम्मी, डैडी...
..वह देखो.. भारत
कुमार भैया आ गये..!



दूसीबीच हिमशिखर पर उभरी रहस्यमयी
रोशानी धीरे-धीरे बुकने लगी....



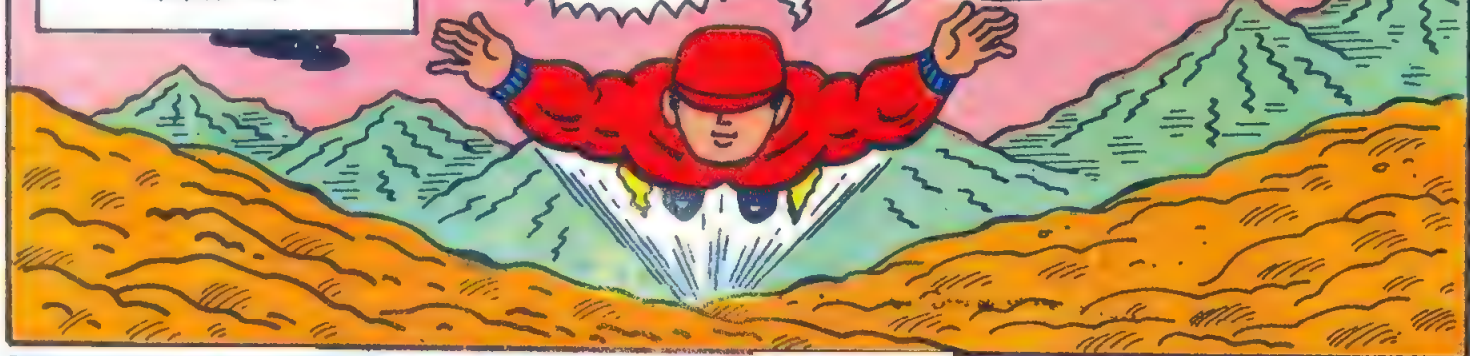
... और उसरोशानी के बुकते ही फिर उस पूरे इलाके में सदा
की मांति पूर्ण झान्ति छा गयी.....



भारत कुमार ने पूरे इलाके में
छूमते हुए कुसीबत में फंसे
लगभग सभी लोगों की जान
बचा ली थी....

हैलो, भारत
कुमार.. काम खत्म हो
गया हो तो वापस
लौट आओ!

हैलो, विक्रम चाचा, संदेश
मिल गया! काम खत्म हो गया..
... वापस आ रहा हूँ....
... ओवर!

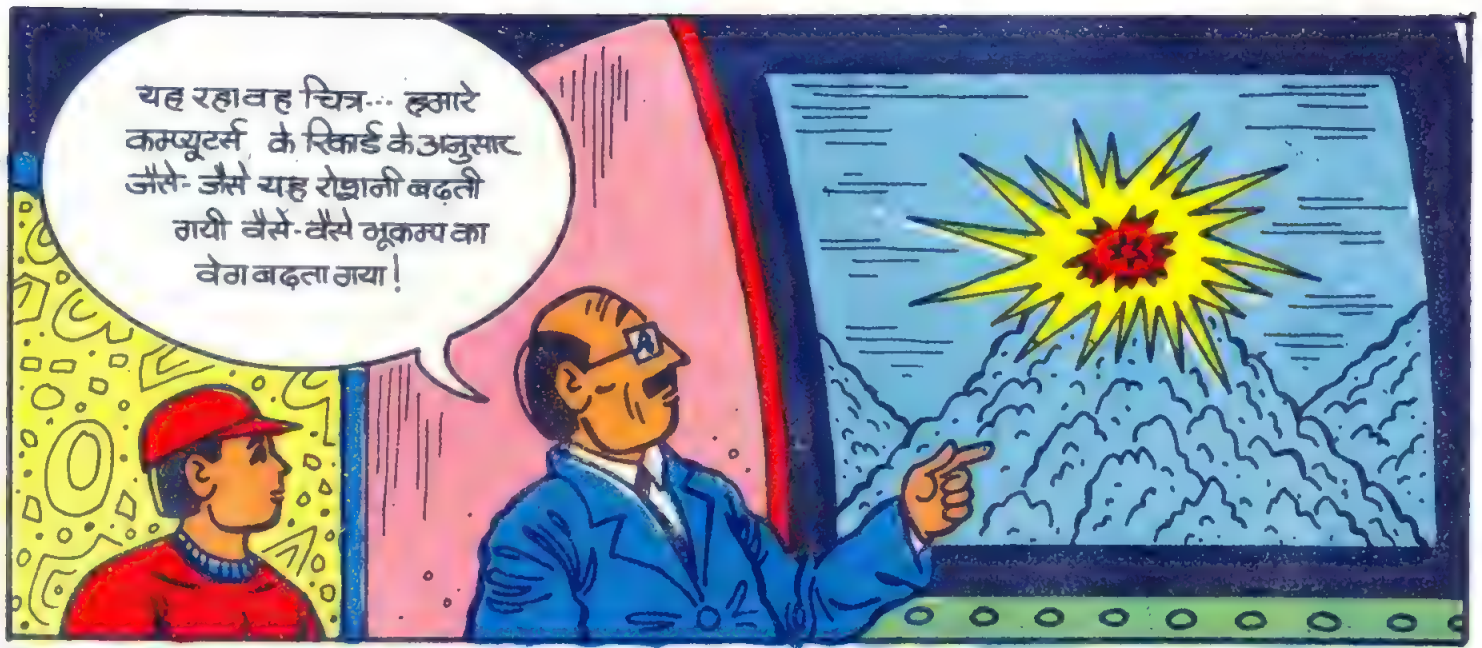


और भारत कुमार
वापस प्रयोगशाला
आ पहुंचा....

मेरी टोपी में लगे विशेष
माइक्रोफोन से मुझे आप
का संदेश मिल
गया था!

भारत कुमार, ऐसा लगता है कि हमें इस
प्रलयकारी भूकम्प के कारण का कुछ
कुछ पता लग गया है.. भूकम्प के
समय हमारे उपग्रह के
कैमरों ने कुछ रहस्यमय चित्र
लिखे हैं.. आओ देखें!





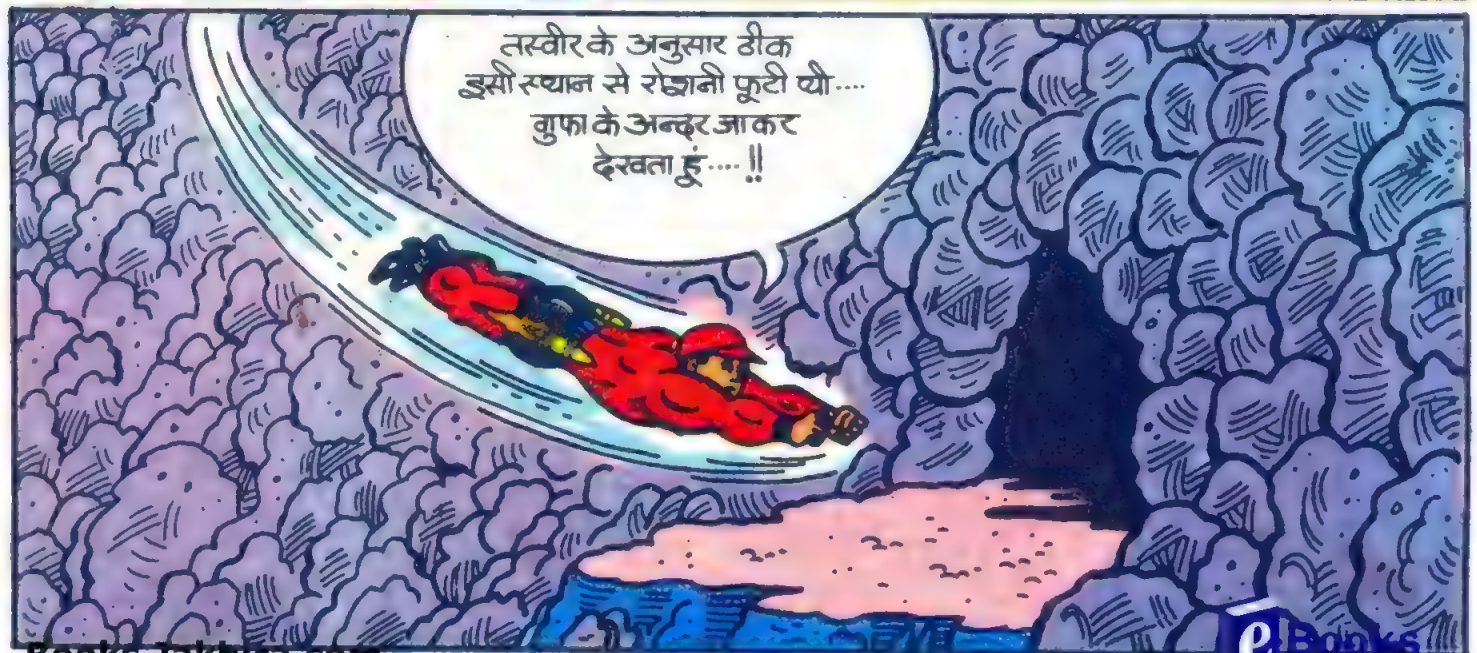
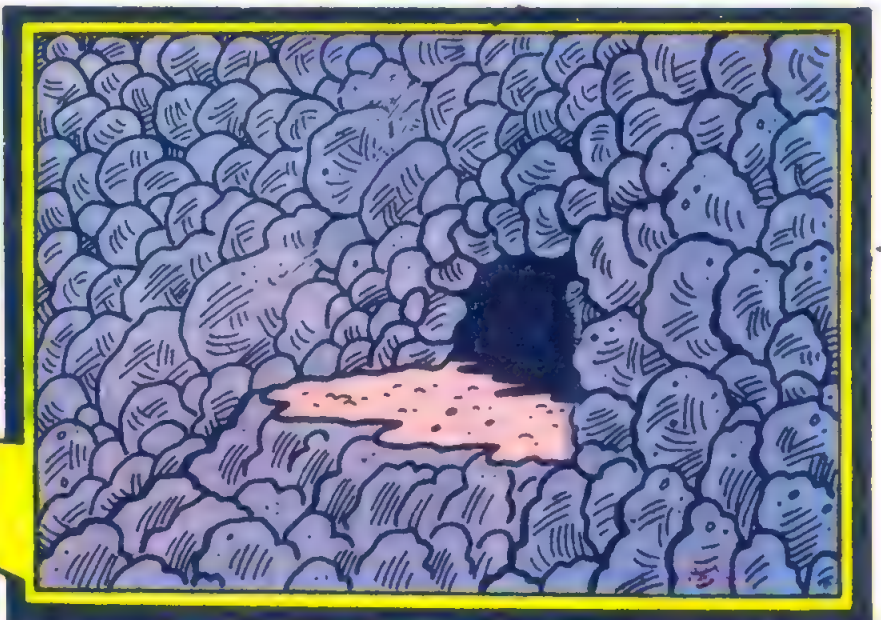
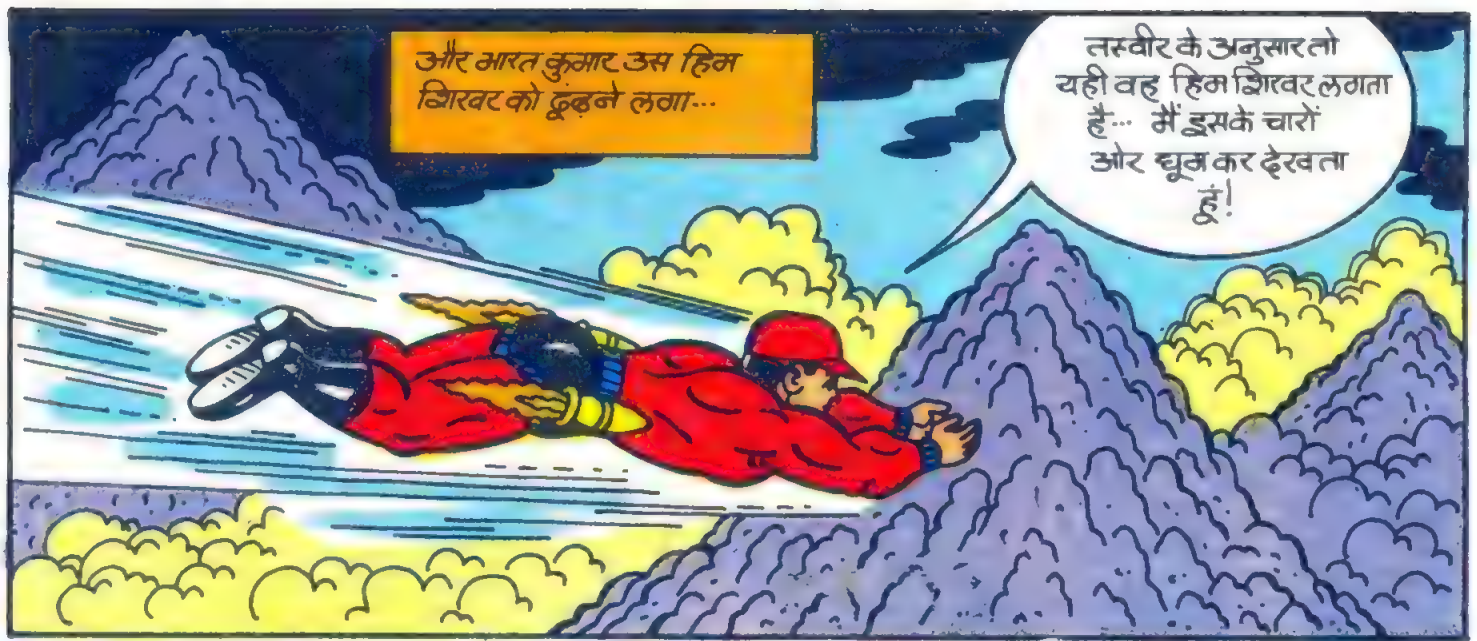
और विक्रम ने उस तस्वीर को पांच
कारव गुना बड़ा कर दिया...

यह देखो, भातकुमार! चमकती
रोशनी के ठीक बीचोंबीच एक
मानव की आकृति... लेकिन
यह भला हो कौन सकता
है...?

जो भी कोई हो...
बड़ा शक्तिशाली लगता
है... यह तो अकेले ही पूरे
विश्व को तबाह
कर सकता है...!

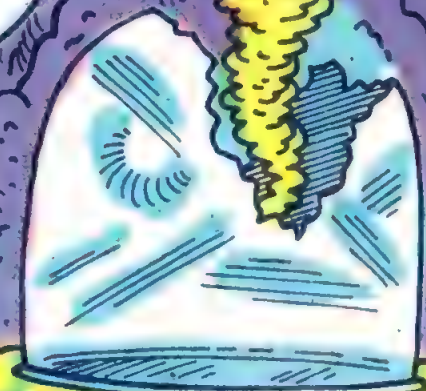
भातकुमार, इसी क्षण जाओ और
उस हिम शिखर पर उस रहस्यमय
मानव को ढूँढें... यह तो
राजब हो गया!

अगर वह हमारी ही तरह
कोई इन्सान हुआ तो मेरे
हाथों से नहीं बचेगा...!!



और जब भाखुमार गुफा के भीतर पहुंचा तो उसकी आंखें आश्चर्य से फैल गयीं....

यह भला क्या हो सकता है...?
सेसा लगता है कुछ ही देर
पहले यहां जरूर कोई रहस्यमय
घटना घटी है... पर क्या??

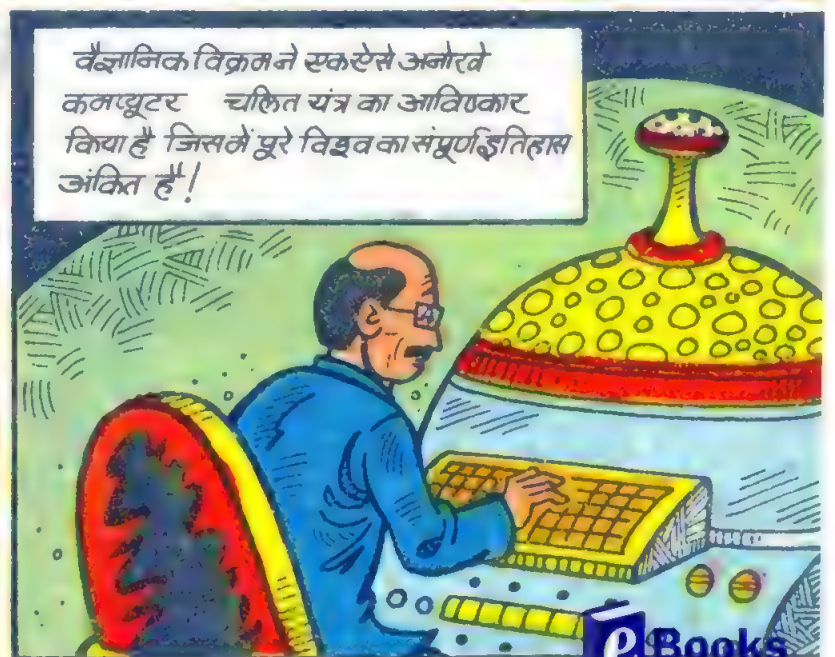
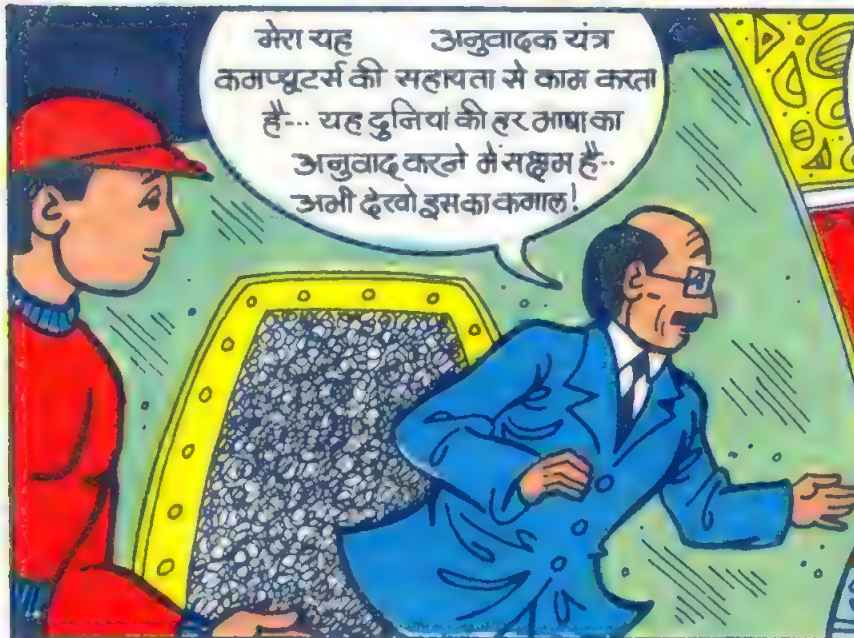


आसपास विशाल
पत्थरों के सिवाय और कुछ
भी नहीं है... लेकिन यह
भला चीज क्या है...?

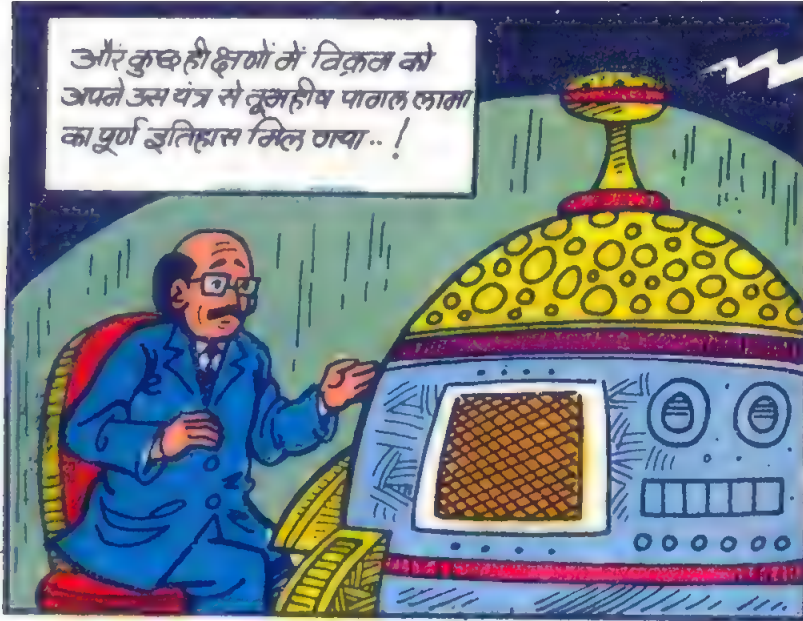


सेसा लगता है इस पर लिखती
लिपि में कुछ अंकित है....
..विक्रम चाचा के पास इसे
ले चलता हूं !!





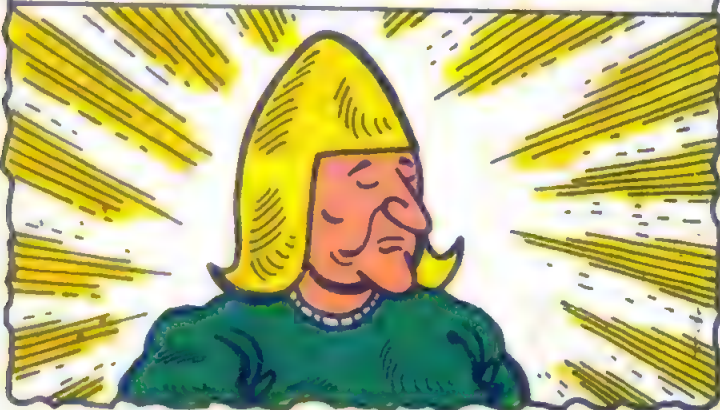
और कुछ ही क्षणों में विक्रम को अपने उस यंत्र से तूम्हीष पाताल लामा का पूर्ण इतिहास मिल गया..!



आज से लगभग आठ सौ वर्ष पहले तिब्बत में तूम्हीष लामा का जन्म हुआ था. वह अपने बाल्यकाल से ही तंत्र-मंत्र साधना में जुटा रहता था...



...तीस वर्ष की आयु में ही उसने सिद्धि प्राप्त कर ली.....
...वह अपार शक्ति का स्वामी हो गया.. लेकिन उस ने अपनी साधना जारी रखी...



.. और कुछ ही वर्षों बाद उस ने मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर ली. लेकिन इस विजय के बाद उसके मन में बहुत अहंकार आ गया...

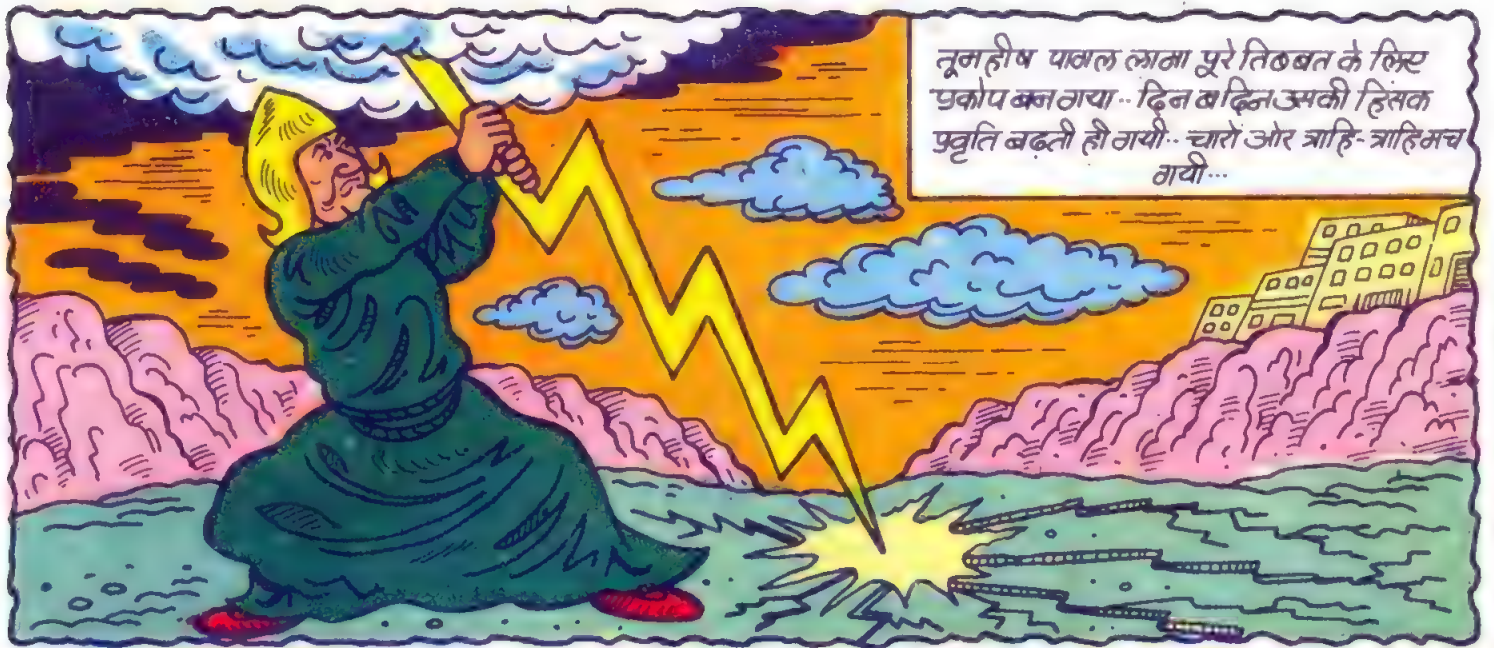


... और एक दिन तंत्र साधना के दौरान उसके दिमाग पर बहुत जोरदार कटका लगा. उस कटके से वह अपना गानसिक सम्बन्धन सदा के लिए खो बैठा !

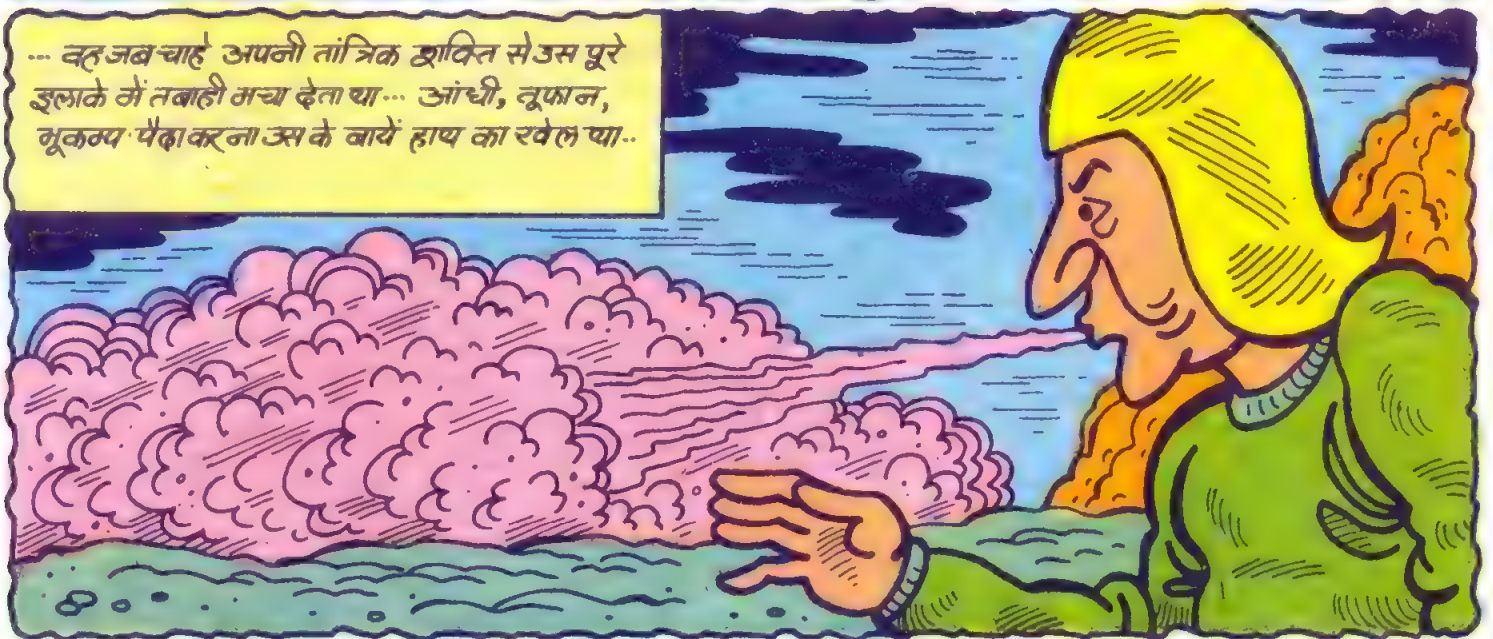


.. तूम्हीष लामा पाताल होते ही हिंसक बन गया.. और वह अपनी वान्रिक शक्ति को हिंसक कार्य में प्रयोग करने लगा..





... वह जब चाह अपनी तांत्रिक शक्ति से उस पूरे इलाके में तबाही मचा देता था... आंधी, वूफान, भूकम्प पैदा करना उस के बायें हाथ का खेल था..



उसी काल में एक बहुत ही तपस्वी वृद्ध लामा झूनु हुआ करते थे.. तिब्बत के प्रमुख लामागण जनता की ओर से उनसे सहायता मांगने उन के निवास स्थान एक गुफा में पहुंचे..

केवल झूनु ही अपने तपोबल से तूमहीष पर अंकुश लगा सकता था.. सो वे सबके अनुरोध पर तूमहीष को बस में करने के लिए राजी हो गये....





... और फिर तपस्वी शूनू और पागल तांत्रिक तूमहीष में जबरदस्त शक्ति परीक्षण हुआ.. अंत में शूनू, तूमहीष को बस में करने में सफल हो ही गया.. पूरी तिब्बत की जनता ने चीन की सांस ली ...

तपस्वी शूनू ने अपनी गुफा में ही विशेष शीशों के बने स्क पिंजड़े में तूमहीष को कैद कर लिया... और तीन सौ वर्ष तक जीने के बाद अपना शरीर त्यागने से पहले पिंजड़े के पास फ्लयर के स्क डुकड़े पर संदेश लिख कर छोड़ दिये....



... और तब से वह खतरनाक पागल लामा उसी गुफा में कैद है.. दुनिया की निगाहों से बहुत दूर.. परमाणु बम से भी अधिक खतरनाक !



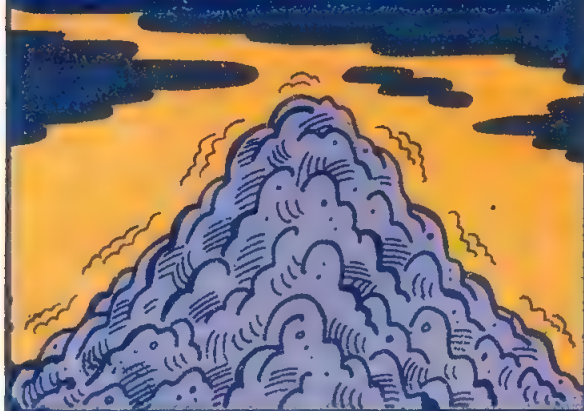
और अब वह खतरनाक पागल लामा आजाद है ! लेकिन वह अपनी कैद से आजाद हुआ कैसे... ? कुछ न कुछ उत्तर आ रहा है मेरे दिमाग में !



कल जहां चीन में परमाणु बम का परीक्षण हुआ था वह स्थान हिम शिखर पर स्थित उस गुफा के काफी करीब है...



... परमाणु विस्फोट के कारण उस
पूरे इलाके में हल्का भूकम्प आया
होगा...



-- पर्वतीय इलाके में हल्के
भूकम्प के मारके भी काफी
खतरनाक साबित हो सकते हैं...



... उसी भूकम्प के प्रभाव से शीबो का
पिंजड़ा टूट गया होगा और पागल
लामा तूमहीब सैंकड़ों वर्षों की कैद से
आजाद हो गया होगा...



.. और उसने आजाद होते ही गुफा
के द्वार पर आकर अपनी तांत्रिक
शक्ति से अचंकर भूकम्प पैदा
किया होगा...



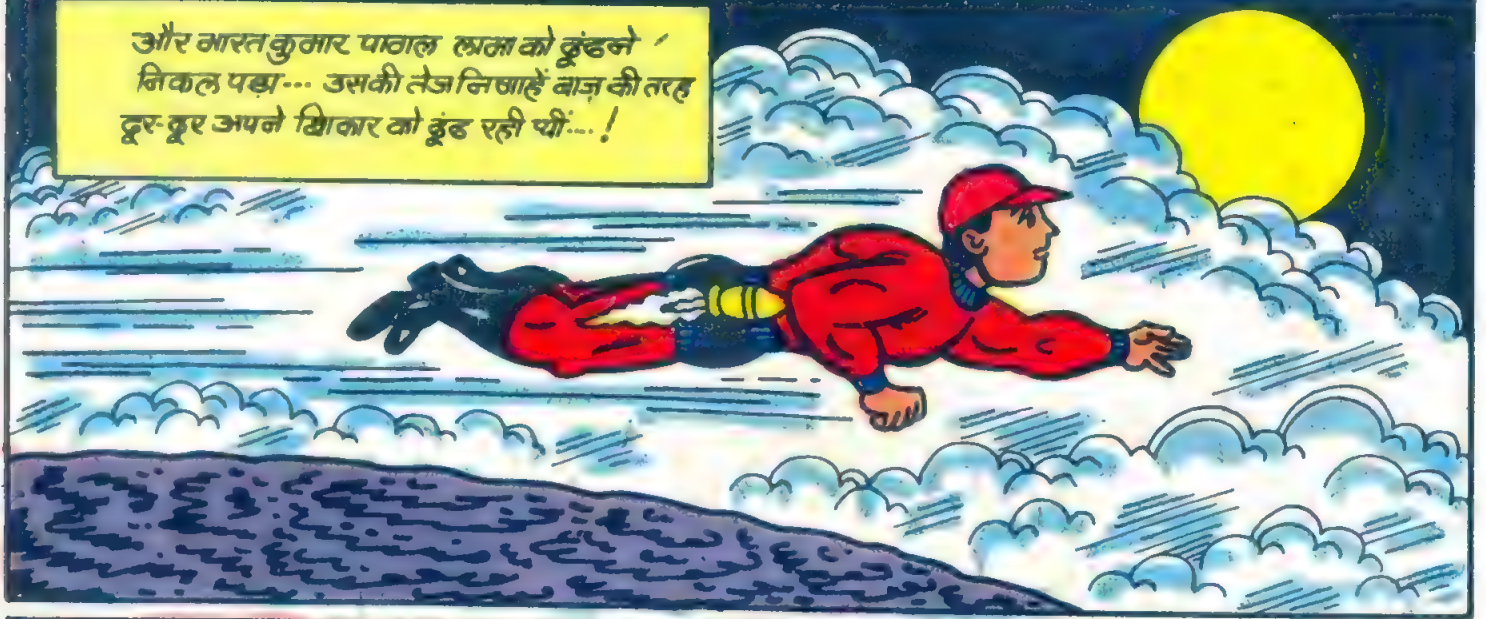
... हमारे जासूसी उपग्रह के कैमरों
ने हिम शिखर पर जिस चमकदार
रोशनी की तस्वीर खींची थी वह
उसी क्षण की रही होगी!

भारत कुमार, तुम इसी क्षण जाओ
और उस पागल लामा को ढूँढ़ो! उस के
आजाद रहने से पूरे विश्व को खतरा है...
वह कभी भी, कहीं भी कोई भी खतर-
नाक काम कर सकता है!

मैं अभी जाता हूँ विक्रम
चाचा! वह पागल लामा जीता
जाता परमाणु बम है ... उसे
हर हालत में हमें रोकना
ही होगा..!!



और भारत कुमार पाताल लामा को ढूँढने निकल पड़ा... उसकी तेज निगाहें बाज़ की तरह दूर-दूर अपने शिकार को ढूँढ रही थीं...!



इतनी बड़ी दुनिया में मैं उस लामा को कैसे ढूँढूँगा? वह अपनी तांत्रिक शक्ति से जाने इस समय कहाँ प्रलय मचा रहा होगा??



तभी भारत कुमार की टोपी में लगे एक सूक्ष्म रेडियों ने एक संदेश पकड़ा....

हैलो.. हैलो... मैं बैरुत एयर पोर्ट कन्ट्रोल टावर से बोल रहा हूँ.. हमारे एक विमान का रहस्यमय डंका से अपहरण हो गया है.... हैल्प!!

रहस्यमय अपहरण? पहले मैं बैरुत एयरपोर्ट जाता हूँ!



कुछ ही मिनटों में भारत कुमार वहाँ पहुँच गया-----







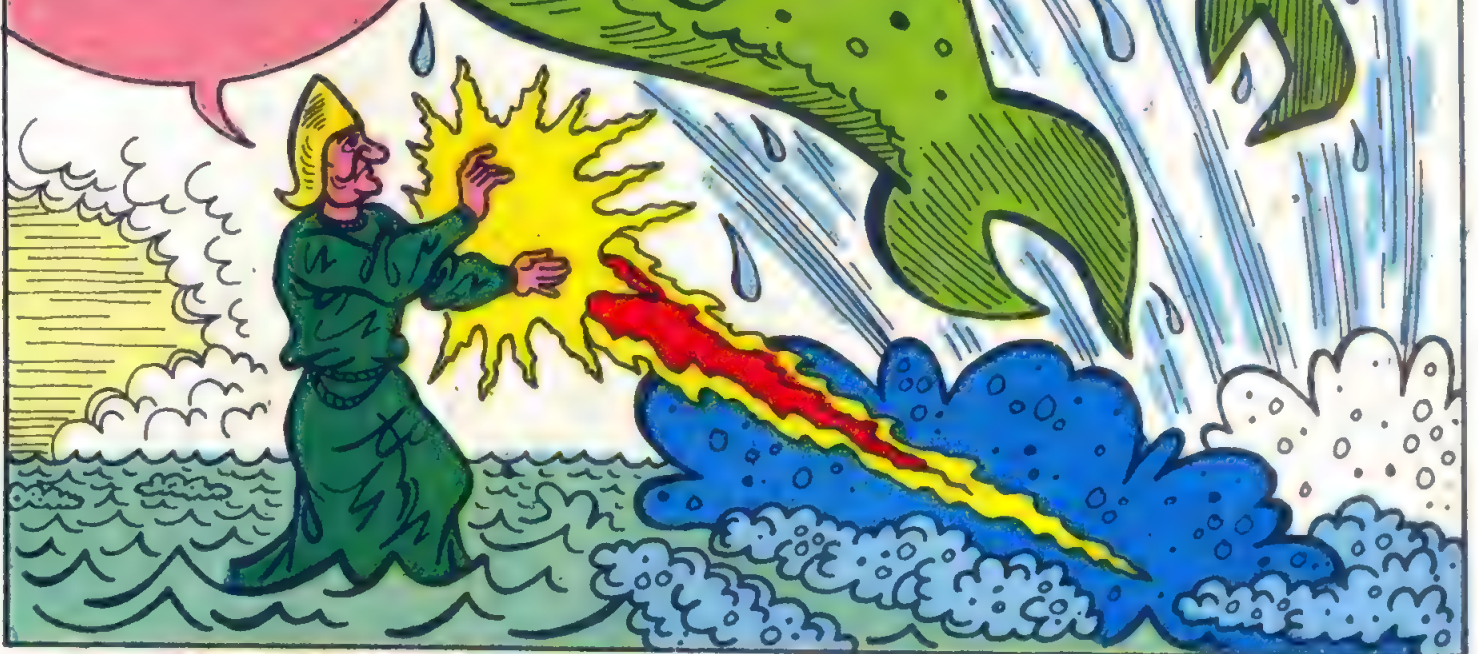




और उस पागल लामाने कुछ मंत्र पढ़े.... मंत्र पूरे होते ही दो विशालकाय मछलियां सागर से बाहर आ गयीं...

मछलियों, जाओ और
उस मुख्य लड़के को आपसमें
बांट कर खा लो..!

हाहाहा!

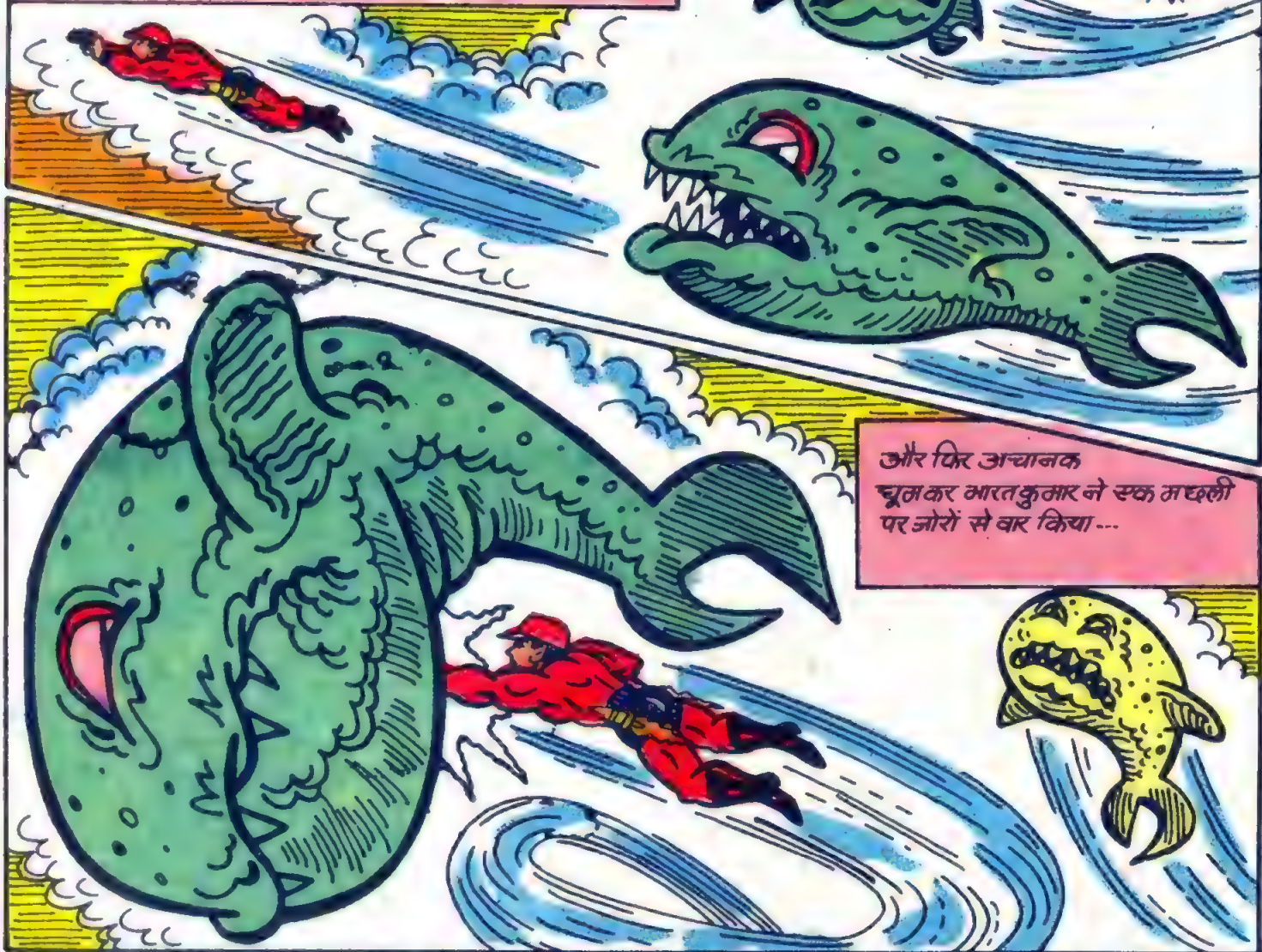


और वे दोनों मछलियां अपने दांत
किलकिलाती हुई भारत कुमार की ओर
लपकीं....

कमाल है!.... हवा
में उड़ती हुई दो खतरनाक
मछलियां.... इन्हें भी
ठिकाने लगाना
ही होगा!!

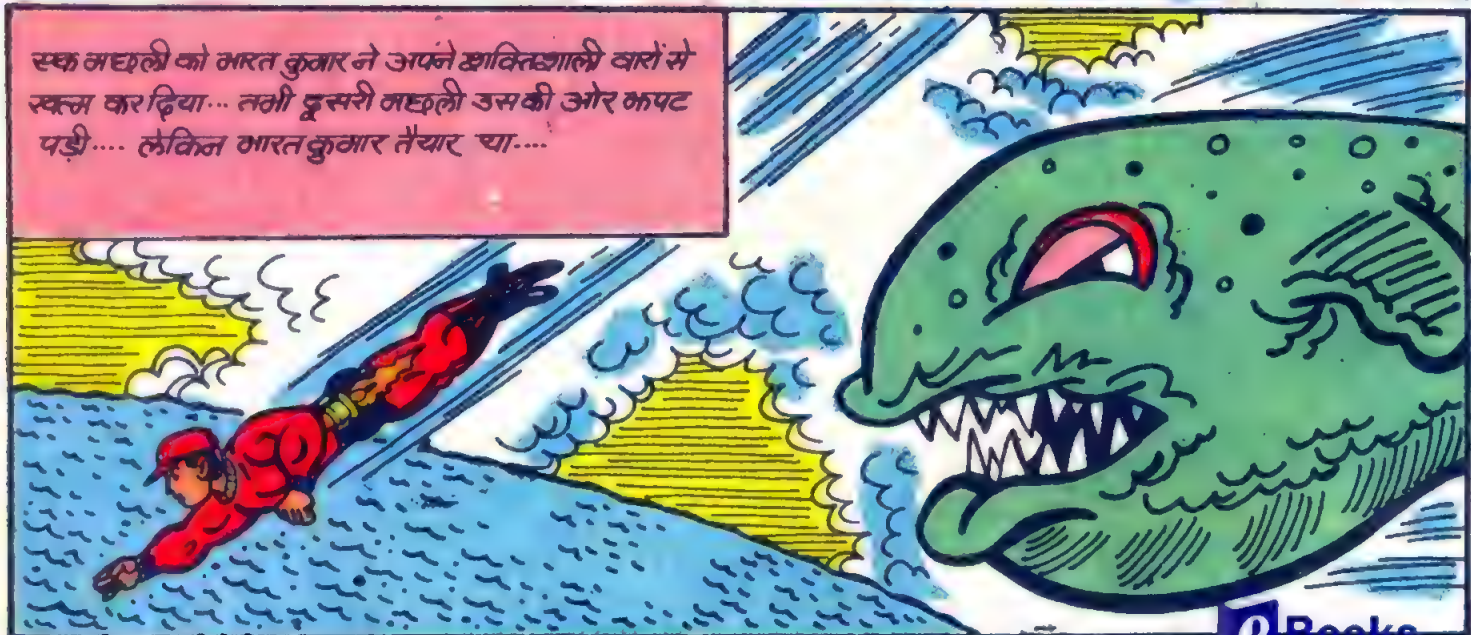


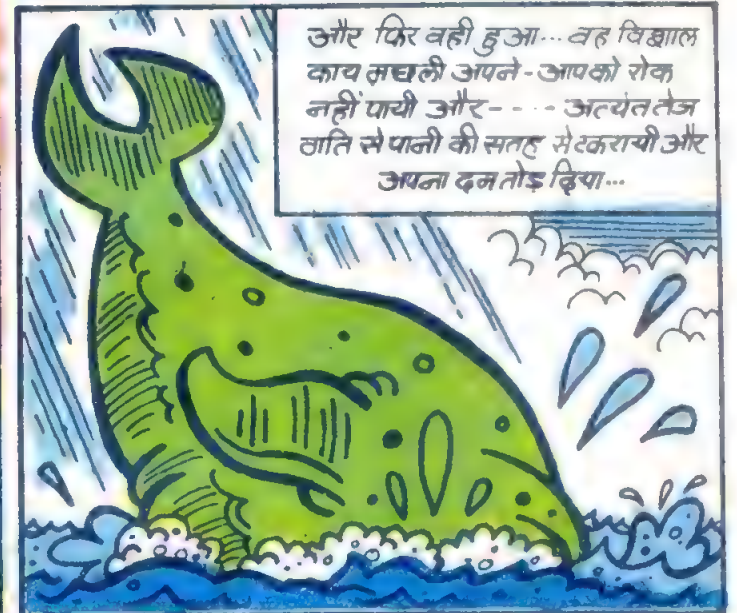
भारत कुमार अपने रॉकेटों के सहारे हवा में कलाबाजियां खाने लगा... और उसके पीछे-पीछे वे मछलियां...



और फिर अचानक छूमकर भारत कुमार ने एक मछली पर जोरों से वार किया...

एक मछली को भारत कुमार ने अपने शक्तिशाली वारों से स्कम कर दिया... तभी दूसरी मछली उसकी ओर भपट पड़ी.... लेकिन भारत कुमार तैयार था....





और पागल लामाने
अपनी महाशक्ति का प्रयोग
करते हुए भारतकुमार पर बार
किया...!

लड़के! लै
अब सम्भाल मेरे
इसवार को -----
--हीहीही!!

बुस अग्नि ने तो
मुझे पूरी तरह से जकड़ लिया
है.. लगता है इसकी गर्मी को मेरे
कापड़े अधिक सहन नहीं कर
पायेंगे.. आह२२!!

हा हा हा!

अब अला मुक्त से कौन टकराने
की हिम्मत करेगा..?

लेकिन तभी अचानक एक बिजली की किरण हिंसा पर
उतरू नूमहीष के सिर से आ टकरायी..

यह क्या?

उस बिजली की किरण का वार करने वाला कोई और नहीं बल्कि खुद वैज्ञानिक विक्रम थे....

सिद्धि प्राप्त इस लामा को हम मार तो सकते हैं... लेकिन इस वैज्ञानिक युग में हम इन किरणों की बौछार से इसके पातालपन का इलाज जरूर कर सकते हैं!

विक्रम चाचा,
... मुझे इस कैद से
छुड़ाइये!
आह!

यययह क्या हो रहा है?
मेरा सिर फटा जा रहा है.....!

अअआह!

और फिर कुछ
ही क्षणों बाद...

मैं कहाँ हूँ?... मैं
सागर के पास क्या कर
रहा हूँ....? यह सब
क्या हो रहा
है...??

तूमहीब का पातालपन ठीक होते
ही भारतकुमार की उसकी कैद से
आजाद हो गया...

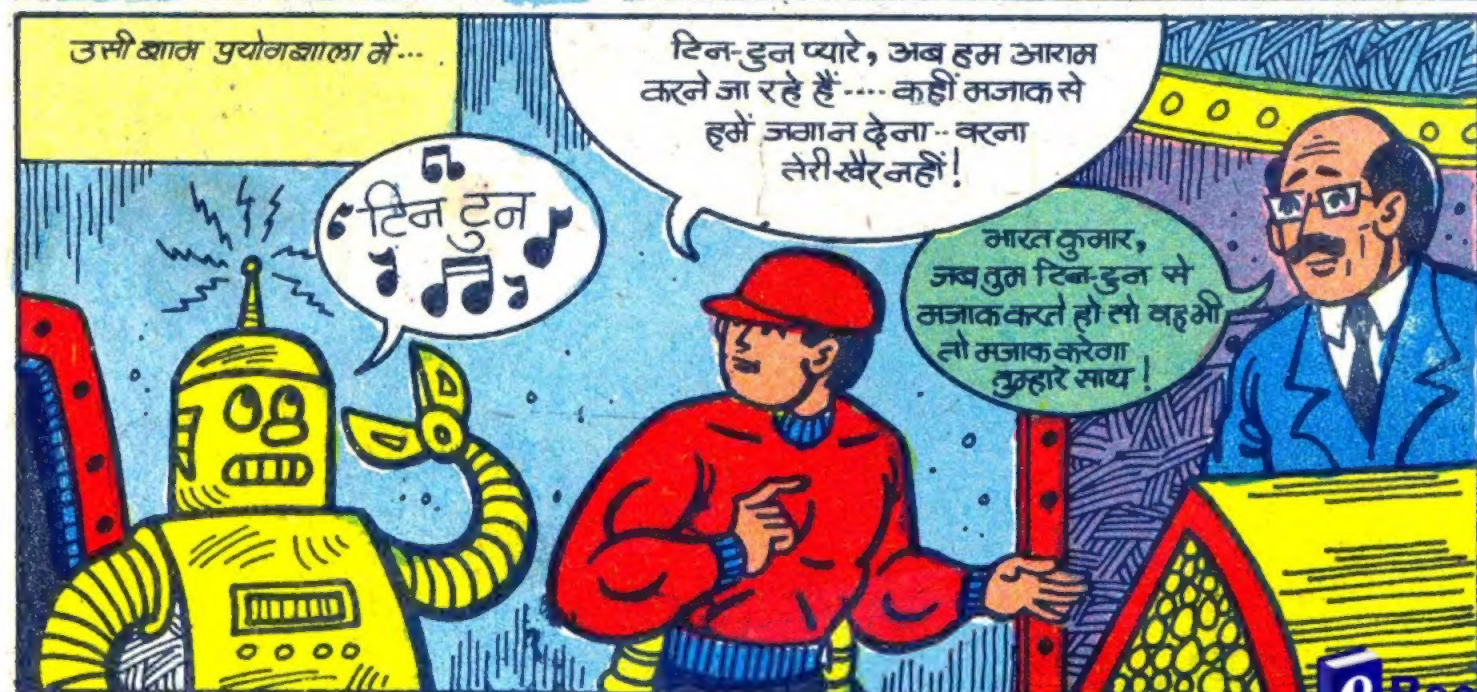
विक्रम चाचा, आप
बहुत ही ठीक समय
पर आये! वरना आज
मैं इस महाप्राप्ति के
वार से बच न पाता!



और फिर नूमहीष लामा ने ईश्वर का नाम जपते हुए उसी क्षण अपनी सांसों को रोक कर अपना शरीर त्याग दिया... और अनन्त में विलीन हो गया...



भारत कुमार और वैज्ञानिक विक्रम वापस अपनी प्रयोग-शाला की ओर चल दिये...

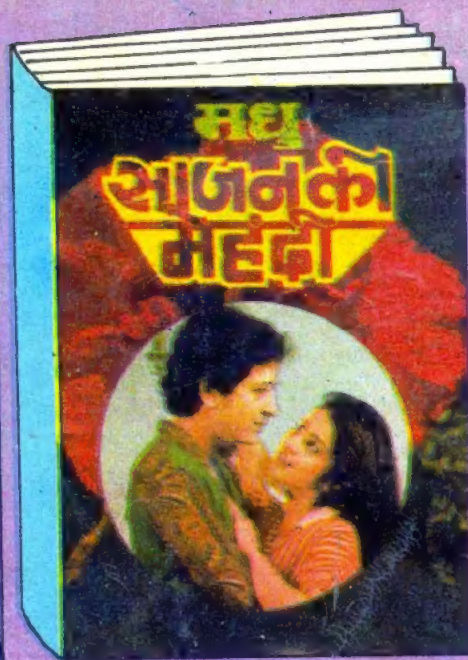




(मार्मिक, हृदय स्पर्शी
भावनाओं से ओतप्रोत उपन्यास)

बहु मेरी बेटी

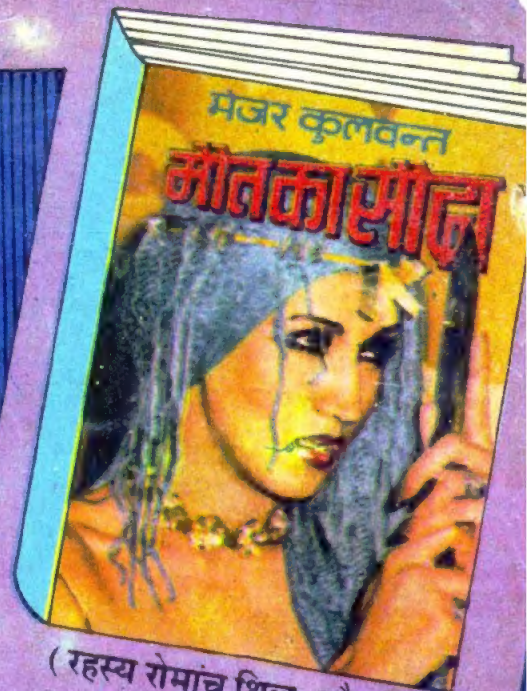
मनोज वाजपेयी- मूल्य 6/-



(एक नारी द्वारा नारी के
अन्तर्द्वन्द की गाथा)

साजन की मेहंदी

मधु- मूल्य 6/-



(रहस्य रोमांच थ्रिल, और मेजर
दिलीप के सनसनीखेज कारनामों
से भरपूर दस्तावेज)

मौत का सौदा

मेजर कुलवन्त- मूल्य 6/-



सुपर पॉकेट बुक्स

गुलाब हाऊस मायापुरी,
नई दिल्ली-110064

के तृतीय सैट की
श्रृंखला में

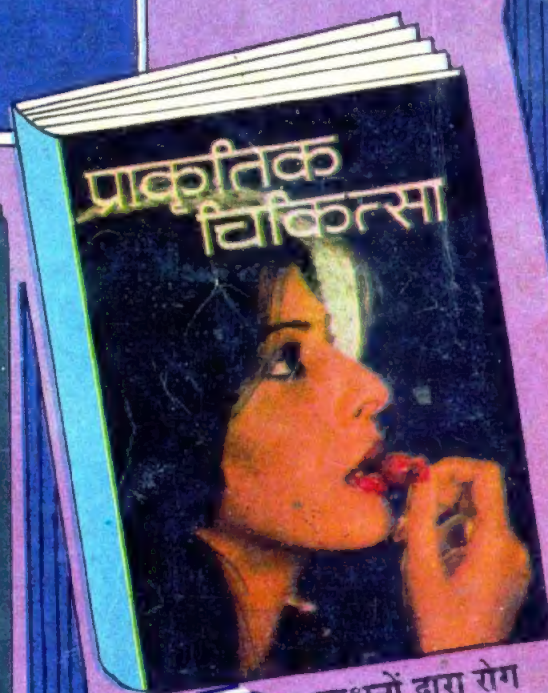


(आपके प्रिय युवा जासूसी
उपन्यासकार का श्रृंखला अत्यन्त
तेज रसदार थ्रिलर उपन्यास देकर
जिन्होंने जासूसी उपन्यास जगत
में नया स्थान प्राप्त किया है)

Books.Jaknira.com



(युवा उद्यमियों के लिए
अत्यन्त उपयोगी पुस्तक)



(प्रकृतिक साधनों द्वारा रोग
निवारण को सुगम पद्धति "प्राकृतिक
चिकित्सा" पर लिखित अत्यन्त
उपयोगी पुस्तक)

eBooks

20 अगस्त से सभी पुस्तक विक्रेताओं के यहाँ उपलब्ध।